तत्काल प्रसारण के लिए

13वीं एन्युअल स्टेटस ऑफ़ एजुकेशन रिपोर्ट (असर 2018) जारी

नई दिल्ली, 15 जनवरी 2019

देश में प्राथमिक शिक्षा की दशा-दिशा का जायज़ा लेने वाली प्रतिष्ठित वार्षिक सर्वेक्षण रिपोर्ट - **असर 2018** आज जारी हो गई | इस वर्ष यह रिपोर्ट असर के पूर्व कार्यकर्ताओं के हाथों जारी की गई |

असर 2017 में 'बियॉन्ड बेसिक्स' के तहत 14 से 18 वर्ष के किशोर-किशोरियों की उन तैयारियों का जायज़ा लिया गया था जो उन्हें एक उपयोगी और उत्पादक वयस्क के रूप में तैयार करती हैं | असर 2018 एक बार फिर ग्रामीण भारत में 3 से 16 वर्ष के बच्चों के स्कूल में नामांकन और 5 से 16 वर्ष के बच्चों की पढ़ने व गणित करने की बुनियादी क्षमताओं पर केन्द्रित है |

शिक्षा क्षेत्र की शीर्षस्थ गैर-व्यावसायिक संस्था 'प्रथम' द्वारा कराए जाने वाले असर सर्वे को प्रत्येक ग्रामीण जनपद में स्थानीय सहयोगी संस्थाओं के स्वयंसेवी अंजाम देते हैं | हर वर्ष असर में यह जांच की जाती है कि ग्रामीण भारत के कितने बच्चे स्कूल जा रहे हैं और आसान पाठ पढ़ पाने व बुनियादी गणित करने में कितने सक्षम हैं | 2005, 2007 और 2009 से निरंतर चयनित गांव के एक सरकारी स्कूल का अवलोकन भी असर सर्वे में शामिल किया गया | शिक्षा का अधिकार अधिनियम (RTE एक्ट) 2010 के बाद असर सर्वे में उन मापन योग्य मानकों की पड़ताल को शामिल किया गया जो इस क़ानून के तहत हर विद्यालय के लिए बाध्यकारी हैं | 2018 में असर सर्वे के तहत ग्रामीण 15,998 सरकारी स्कूलों का अवलोकन किया गया |

असर 2018 (ग्रामीण) के मुख्य निष्कर्ष

असर 2018 ग्रामीण भारत के 596 जिलों तक पहुंचा | इस तरह इसमें कुल मिलाकर 354,944 घरों और 3 से 16 वर्ष के 546,527 बच्चों का सर्वेक्षण किया गया |

स्कूली स्तर: नामांकन और उपस्थिति

- **समग्र नामांकन (आयुवर्ग 6-14 वर्ष):** सन 2007 से अब तक पिछले 10 वर्षों से भी ज्यादा अर्से से स्कूलों में आयुवर्ग 6 से 14 वर्ष के बच्चों के नामांकन का प्रतिशत 95% से ज्यादा रहा है | अनामांकित बच्चों (आयुवर्ग 6-14 वर्ष) की संख्या 2018 में पहली बार 3% से गिरकर 2.8% पर आई है |
- **स्कूल से बाहर लड़कियां:** वर्ष 2006 में आयुवर्ग 11-14 वर्ष की स्कूल न जाने वाली लड़कियों का प्रतिशत 10.3% था | तब 9 प्रमुख राज्यों में स्कूल न जाने वाली लड़कियों (11-14 वर्ष) का आंकड़ा 10% से ऊपर था | 2018 में इस आयुवर्ग की स्कूल न जाने वाले लड़कियों का देशव्यापी आंकड़ा नीचे गिरकर 4.1% पर आ गया है | सिर्फ 4 राज्यों में यह संख्या 5% से ऊपर है |
  इसके अलावा, दस वर्ष पहले 2008 में, 15 से 16 आयुवर्ग की 20% से ज्यादा लड़कियों का स्कूल में नामांकन नहीं था | 2018 में यह प्रतिशत घटकर 13.5% पर आ गया है |
- **प्राइवेट स्कूलों में नामांकन:** वर्ष 2006 से 2014 के दौरान प्राइवेट स्कूलों में जाने वाले बच्चों (आयुवर्ग 6-14 वर्ष) की संख्या में साल दर साल इजाफ़ा देखा गया | 2014 में यह आंकड़ा 30.8% पर आकर रुक गया | तब से प्राइवेट स्कूलों में इस आयुवर्ग की नामांकन दर अपने उच्चतम स्तर तक पहुंच चुकी प्रतीत होती है | वर्ष 2016 में 6-14 वर्ष आयुवर्ग के 30.6% बच्चे प्राइवेट स्कूलों में नामांकित थे | वर्ष 2018 में यह संख्या लगभग 30.9% पर बनी हुई है |

  राष्ट्रीय औसत के आंकड़ों में विभिन्न राज्यों के बीच प्राइवेट स्कूलों में नामांकन में अंतर की तस्वीर छुप जाती है | राजस्थान, उत्तर प्रदेश और केरल में प्राइवेट स्कूलों में नामांकन की दर में 2016 के स्तर से 2 प्रतिशत पॉइंट की गिरावट दर्ज की गई है | दूसरी ओर जम्मू और कश्मीर,

हिमाचल प्रदेश, बिहार और गुजरात में इस आंकड़े में 2 प्रतिशत पॉइंट की वृद्धि देखी गई | मिजोरम के अलावा उत्तर पूर्व के अधिकतर राज्यों में 2016 और 2018 के दौरान प्राइवेट स्कूलों में नामांकन की दर में बढ़ोतरी देखी गई है |

अधिगम स्तर: पढ़ने व गणित करने के बुनियादी कौशल

पढ़ने की स्थिति: असर टेस्ट से यह पता चलता है कि अक्षर, शब्द, पहली कक्षा के स्तर के सरल अनुच्छेद, या कक्षा 2 के स्तर के पाठ को पढ़ने की क्षमता के लिहाज से कोई बच्चा कहां पर है | यह टेस्ट 5 से 16 वर्ष की आयु के प्रत्येक बच्चे को सामने बिठाकर लिया जाता है और उसके प्रदर्शन के उच्चतम स्तर को चिन्हित किया जाता है |

- **कक्षा 3:** कक्षा 2 के स्तर के पाठ को आसानी से पढ़ पाने में सक्षम कक्षा 3 के बच्चों का प्रतिशत पिछले कुछ वर्षों के दौरान लगातार बढ़ा है | 2013 में यह आंकड़ा 21.6% था जो बढ़कर 2014 में 23.6%, 2016 में 25.1% और 2018 में अंततः 27.2% तक पहुंच गया | सरकारी विद्यालयों में नामांकित कक्षा 3 के बच्चों ने छः राज्यों (पंजाब, हरियाणा, मिजोरम, उत्तर प्रदेश, गुजरात और केरल) में इस बार 2016 के मुकाबले 5 प्रतिशत पॉइंट का सुधार दर्ज करवाया है |

- **कक्षा 5:** कक्षा 5 में नामांकित आधे से कुछ ज्यादा बच्चे कक्षा 2 के स्तर के पाठ को पढ़ सकते हैं | यह आंकडा 2016 में 47.9% था जो 2018 में बढ़कर 50.3% पर आ गया है | जिन राज्यों के सरकारी विद्यालयों के कक्षा 5 के बच्चों ने इस दौरान 5 प्रतिशत पॉइंट का सुधार दर्ज किया है, वे हैं - हिमाचल प्रदेश, उत्तर प्रदेश, उड़ीसा, छत्तीसगढ़, कर्नाटक, केरल, अरुणाचल प्रदेश और मिजोरम | पंजाब और आंध्र प्रदेश इनसे थोड़ा ही पीछे हैं |

- **कक्षा 8:** कक्षा 8 भारत में अनिवार्य प्राथमिक स्कूल का अंतिम पड़ाव है | इस स्तर पर बच्चे से यह अपेक्षा की जाती है कि उसे न केवल बुनियादी कौशलों में महारत हासिल हो बल्कि वह प्राथमिक स्तर से आगे बढ़ चुका हो | असर 2018 के आंकड़े बताते हैं कि कक्षा 8 में नामांकित देश के लगभग 73% बच्चे कम से कम कक्षा 2 के स्तर का पाठ पढ़ लेते हैं | यह आंकड़ा 2016 से जस का तस है |

गणित: असर का गणित टेस्ट से पता चलता है कि बच्चा 1 से 9 तक के अंकों की पहचान कर पाता है, 10 से 99 तक की संख्याओं की पहचान कर पाता है, 2 अंकों के हासिल वाले घटाव के सवाल हल कर लेता है या (3 अंकों में एक अंक के) भाग के सवालों को सही-सही हल कर लेता है | यह टेस्ट बारी-बारी से 5 से 16 वर्ष की आयु के प्रत्येक बच्चे को सामने बिठाकर लिया जाता है और उसके प्रदर्शन के उच्चतम स्तर को चिन्हित किया जाता है |

- **कक्षा 3:** घटाव के सवालों में हल कर पाने में सक्षम देश भर के तीसरी कक्षा के बच्चों की संख्या पिछले दो वर्षों से अपरिवर्तनीय है | 2016 में ऐसे बच्चों की संख्या जहां 27.6% थी, वहीं 2018 में यह 28.1% है | सरकारी स्कूलों के बच्चों में यह प्रतिशत 2016 में 20.3% था, जो 2018 में 20.9% दर्ज हुआ | इसके बावजूद 2016 के बाद से कुछ राज्यों में सरकारी स्कूलों के बच्चे 3 प्रतिशत पॉइंट के सुधार के साथ उल्लेखनीय रूप से बेहतर प्रदर्शन करते दिखाई दिए हैं | ये राज्य हैं - पंजाब, हरियाणा, असम, उत्तर प्रदेश, गुजरात, महाराष्ट्र और केरल |
- **कक्षा 5:** देश में भाग के सवाल हल कर पाने में सक्षम कक्षा 5 के बच्चों का प्रतिशत बढ़ा है | 2016 में ऐसे बच्चों का हिस्सा जहां 26% था, वहीं 2018 में यह 27.8% हो गया | लेकिन कुछ राज्यों में सरकारी विद्यालयों के बच्चों में यह सुधार 2016 के मुकाबले 5 प्रतिशत पॉइंट से ज्यादा दर्ज किया गया है | ये राज्य हैं - पंजाब, उत्तर प्रदेश, असम, छत्तीसगढ़, महाराष्ट्र, केरल और तमिलनाडु |
- **कक्षा 8:** कक्षा 8 के बच्चों का बुनियादी गणित में सकल प्रदर्शन पिछले तमाम वर्षों के दौरान कुछ ख़ास नहीं बदला है | फिलहाल कक्षा 8 के सभी बच्चों में केवल 44% ही 3 अंकों में एक अंक के भाग के सवालों को सही-सही हल कर पाने में सक्षम हैं | जहां 2016 के मुकाबले 2018 में यह आंकड़ा अनेक राज्यों में और नीचे गिरा है, वहीं कुछ राज्यों में सरकारी स्कूलों के बच्चों में उल्लेखनीय सुधार भी दिखाई देता है - उदाहरण के लिए, पंजाब (48% से बढ़कर 58.4%), उत्तर प्रदेश (25.5% से बढ़कर 32%), महाराष्ट्र (32.4% से बढ़कर 41.4%) और तमिलनाडु (42.6% से बढ़कर 49.6%) |

अधिगम स्तर: 'बियॉन्ड बेसिक्स'

असर 2018 में आयुवर्ग 14 से 16 वर्ष के बच्चों को कुछ ऐसे काम दिए गए जिनमें रोजमर्रा जीवन से जुड़े हिसाब-किताब की ज़रूरत पड़ती है | बच्चों को समय बताने, पानी साफ़ करने में लगने वाली गोलियों की गणना करने (एकिक विधि का उपयोग करने), दो अलग-अलग मूल्य सूचियों के आधार पर किताबों के दाम की गणना करने (वित्त सम्बंधी निर्णय लेने) और वस्तुओं की खरीद में मिलने वाली छूट की गणना करने को कहा गया | उपरोक्त

प्रत्येक काम सामने बिठाकर करने को कहे गए | इस आयुवर्ग के सिर्फ उन बच्चों के परिणामों को दर्ज किया गया जो कम से कम घटाव के सवालों को कर पाने में सक्षम थे |

- **पढ़ने व गणित करने की क्षमता के मामले में आयुवर्ग 14-16 वर्ष समूह में लैंगिग असमानताएं:** आयुवर्ग 14 से 16 वर्ष में कम से कम कक्षा 2 स्तर के पाठ को पढ़ पाने में सक्षम बच्चों के बीच लड़कियों का प्रतिशत लड़कों जितना ही है | दोनों में ऐसे बच्चों का प्रतिशत 77% है | लेकिन कई राज्यों, जैसे - हिमाचल प्रदेश, पंजाब, पश्चिम बंगाल, असम, छत्तीसगढ़, महाराष्ट्र, कर्नाटक और तमिलनाडु में लड़कियां लड़कों से आगे नज़र आती हैं |

  प्रारंभिक गणित में लड़के बाज़ी मारते प्रतीत होते हैं | राष्ट्रीय स्तर पर 14 से 16 वर्ष के बच्चों में जहां 50% लड़के भाग के सवालों को सही-सही हल कर लेते हैं, वहीं लड़कियों में यह प्रतिशत 44% है | लेकिन हिमाचल प्रदेश, पंजाब, कर्नाटक, केरल और तमिलनाडु में इस आयुवर्ग की लड़कियां लड़कों से बेहतर प्रदर्शन करती दिखाई देती हैं |

- **'बियॉन्ड बेसिक्स'- बोनस टूल:** 14-16 आयुवर्ग में भाग के सवालों को हल कर लेने वालों में आधे से थोड़ा कम बच्चे ही समय सम्बंधी सवालों को हल कर पाते हैं | 52% बच्चे दी गई मात्रा के पानी को साफ़ करने में लगने वाली गोलियों की संख्या एकिक नियम विधि से निकाल लेते हैं | 37% बच्चे किताबों की खरीद के सवालों में सही निर्णय ले सकते हैं, जबकि 30% से भी कम बच्चे छूट की गणना सही-सही कर पाते हैं | इन सभी मामलों में लड़कों के मुकाबले कहीं कम लड़कियां सवालों का सही जवाब देती पाई गईं |

  इसके अलावा दैनिक जीवन से जुड़े इन सवालों पर प्रदर्शन के मामले में इस आयुवर्ग में उन बच्चों का प्रदर्शन खराब रहा जो घटाव के सवाल तो कर सकते हैं लेकिन भाग के नहीं | इनकी तुलना में भाग के सवाल कर लेने वालों का प्रदर्शन थोड़ा बेहतर दिखाई दिया |

स्कूलों का अवलोकन

असर सर्वे के हिस्से के तौर पर, प्रत्येक चयनित गांव में प्राथमिक कक्षाओं वाले एक सरकारी स्कूल का अवलोकन किया जाता है | इस मामले में सरकारी प्राथमिक विद्यालय (कक्षा 1 से 7/8 तक) को प्राथमिकता दी जाती है |
वर्ष 2018 में असर सर्वेक्षक प्राथमिक कक्षाओं वाले 15,998 सरकारी विद्यालयों में पहुंचे | इनमें 9,177 प्राथमिक विद्यालय और 6,821 उच्च प्राथमिक विद्यालय थे | यह संख्या 2016 में सर्वेक्षित उच्च प्राथमिक विद्यालयों की संख्या से 13.6% ज्यादा थी | उच्च प्राथमिक विद्यालयों वाले चयनित गांवों की संख्या में बड़ी वृद्धि हरियाणा, उत्तर प्रदेश, असम और मध्य प्रदेश में दर्ज की गई |

छोटे स्कूल

- अखिल भारतीय स्तर पर वर्ष 2018 के सर्वे में अवलोकित 10 सरकारी स्कूलों में से 4 स्कूलों में बच्चों की नामांकन संख्या 60 से कम पाई गई | पिछले एक दशक में ऐसे स्कूलों का प्रतिशत लगातार बढ़ा है | 2009 में यह 26.1% था जो 2011 में बढ़कर 30%, 2013 में 33.1%, 2016 में 39.8% और 2018 में 43.3% हो गया |
- बीते एक दशक में छोटे स्कूलों की संख्या में बढ़ोतरी का यह पैटर्न हिमाचल प्रदेश (2009 में 58.1% से बढ़कर 2018 में 84%), छत्तीसगढ़ (2009 में 19.3% से बढ़कर 2018 में 40.7%) और मध्य प्रदेश (2009 में 18.1% से बढ़कर 2018 में 49.6%) में दिखाई दिया है |

शिक्षक और छात्र उपस्थिति

- अखिल भारतीय स्तर पर छात्रों और शिक्षकों की उपस्थिति के आंकड़ों में कोई बड़ा बदलाव नहीं दिखाई देता है | पिछले कई वर्षों के दौरान प्राथमिक व उच्च प्राथमिक दोनों तरह के विद्यालयों में शिक्षकों की उपस्थिति औसतन 85% रही और छात्रों की उपस्थिति 72% के आसपास |

- लेकिन उपस्थिति के मामले में विभिन्न राज्यों के पैटर्न में काफी अंतर रहा है | 2018 में प्राथमिक विद्यालयों में छात्रों की 90% या ज्यादा उपस्थिति वाले राज्य हैं- कर्नाटक और तमिलनाडु | शिक्षक उपस्थिति के मामले में 2018 में 90% या ऊपर का आंकड़ा छूने वाले राज्य हैं- झारखण्ड, उड़ीसा, कर्नाटक और तमिलनाडु |

- छात्र उपस्थिति के मामले में वर्ष 2016 की तुलना में 3 प्रतिशत पॉइंट या इससे ज्यादा का सुधार दर्ज कराने वाले राज्यों में उत्तर प्रदेश, राजस्थान, पंजाब, उड़ीसा और छत्तीसगढ़ शामिल हैं |

स्कूल में सुविधाएं

- शिक्षा का अधिकार अधिनियम (RTE एक्ट) 2010 में लागू हुआ और इस कानून के प्रावधानों का लाभ लेने वाले विद्यार्थियों के पहले बैच ने अनिवार्य स्कूली शिक्षा के 8 वर्ष 2018 में पूरे कर लिए हैं | इस कानून के तहत मिलने वाली सुविधाओं की उपलब्धता के लिहाज से देश भर में पिछले आठ वर्षों के दौरान हुए उल्लेखनीय सुधार सर्वत्र देखे जा सकते हैं | लड़कियों के शौचालय उपलब्ध होने वाले स्कूलों का आंकड़ा दो गुना इजाफे के साथ 2018 में 66.4% पर पहुंच गया | चारदीवारी वाले स्कूल 13.4% की बढ़ोतरी के साथ 2018 में 64.4% पर पहुंच गए | रसोईघर वाले स्कूलों की संख्या 82.1% से बढ़कर 91% पर पहुंच गई | पाठ्यपुस्तकों से अन्य पुस्तकों की उपलब्धता वाले स्कूलों का आंकड़ा भी इसी दौरान 62.6% से बढ़कर 74.2% को पार कर गया है |
- लेकिन राष्ट्रीय औसत के इन आंकड़ों में राज्यों के बीच मौजूद विषमताओं की तस्वीर छुप जाती है | सुविधाओं में पिछड़ने वाले राज्यों में जम्मू और कश्मीर और उत्तर पूर्व के अधिकतर राज्यों को गिना जा सकता है | 2018 में इन राज्यों के 50% से ज्यादा स्कूल पीने के पानी और लड़कियों के शौचालय से वंचित थे | असम के अपवाद को छोड़कर उत्तर पूर्व के अधिकतर राज्यों में बच्चे 2018 में पुस्तकालय की सुविधा से वंचित पाए गए | देश के बाकी राज्यों के 80% से ज्यादा स्कूलों में जहां सर्वेक्षण के दिन बच्चों को मध्यान्ह भोजन परोसा गया, वहीं पूर्वोत्तर के कई राज्यों में यह आंकड़ा 50% से भी कम दर्ज हुआ |

शारीरिक शिक्षा और खेल सुविधाएं

इस वर्ष असर सर्वे में खेल-कूद की आधारभूत सुविधाओं की उपलब्धता सम्बंधी सवाल भी शामिल किए गए थे |

- 2018 में सर्वेक्षित 10 में से 8 स्कूलों में बच्चों को स्कूल परिसर के भीतर या निकट खेल का मैदान उपलब्ध था | हिमाचल प्रदेश, हरियाणा और महाराष्ट्र के 90% से ज्यादा स्कूलों में खेल के मैदान की व्यवस्था पाई गई | लेकिन जम्मू और कश्मीर, बिहार, उड़ीसा और झारखण्ड के एक चौथाई से ज्यादा स्कूलों को खेल का मैदान नसीब नहीं |
- समूचे ग्रामीण भारत के स्कूलों में शारीरिक शिक्षा अध्यापक मुश्किल से ही मिलते हैं | सर्वेक्षित किए गए मात्र 5.8% प्राथमिक विद्यालयों में और 30.8% उच्च प्राथमिक विद्यालयों में ही शारीरिक शिक्षा अध्यापक तैनात पाए गए | अधिकतर स्कूलों में किसी अन्य शिक्षक को शारीरिक शिक्षा को भी देखने की ज़िम्मेदारी दी गई है | लेकिन हरियाणा, राजस्थान और केरल में शारीरिक शिक्षा अध्यापक की तैनाती वाले स्कूलों का प्रतिशत राष्ट्रीय औसत से काफी आगे पाया गया |
- 55.8% प्राथमिक और 71.5% उच्च प्राथमिक विद्यालयों में किसी न किसी प्रकार की खेल सामग्री उपलब्ध पाई गई | जिन राज्यों के स्कूलों में अपेक्षाकृत ज्यादा खेल सामग्री पाई गई, वे थे- हिमाचल प्रदेश, तमिलनाडु और आंध्र प्रदेश |

अधिक जानकारी के लिए कृपया संपर्क करें:
रणजीत भट्टाचार्य
85100-33068
contact@asercentre.org / ranajit59@gmail.com